

ब्रशोणितम् 56, 23. तं मणं सुप्रतं कृत्वा मुनिष्टप्तं च R. GOBR. 2, 56, 25. निष्ट-  
प्तमूल्यान् शकलान्प्रमृश्य HAARV. 8439. — Vgl. निष्टप्तम्.

— विनिष्ग gar braten, rösten: (मत्स्यान्) पक्वान्विनिष्टप्तान् R. 3, 76, 10.

— परि 1) mit Gluth umgeben, umglühen: तया सर्वे परितप्ताः पुरस्तात्  
आयन्तु AV. 1, 7, 5. in Flammen setzen: यत्पुरा द्वाडकारण्ये सर्वाः परितप-  
न्दिशः R. 3, 35, 15. anschüren (ein Feuer): धर्मं परितप्तमत्रेयं RV. 1, 119, 6.

— 2) Schmerz empfinden, leiden: निकृतज्ञातिबान्धवाः । स्त्रियः परितापि-  
प्यति MBu. 11, 751. परितप्स्यति R. 2, 66, 7. इदं च — न चेन्नमेवं कर्ता परित-  
प्तासि पश्चात् MBu. 3, 230. sich der Askese unterwerfen: त्वं तप्यः परितप्याज्ञयः

स्वः RV. 10, 167, 1. — 3) pass. Schmerz empfinden, leiden: पर्यतप्यत डुःखेन

MBu. 3, 9916. मूर्खभावकृतेनात्मन्युना पर्यतप्यत KATHIS. 2, 59. पर्यतप्यत

तत्पापं कृत्वा MBu. 1, 1747. 1749. 3079 (Gegens. तुष्टो भवति). 5654. 8441. R.

2, 8, 17. 22, 6. 53, 31. 69, 2. 74, 21. KATHIS. 10, 101. BHĀG. P. 4, 7, 15. 4, 3,

20. RĀGĀ-TAR. 4, 550. अघ्न्याः परितप्येपुरुहृतः MBu. 14, 1070. अलभेन

तथाश्चस्य परितप्यामि 3, 8897. पर्यतप्यदुषा शुचा BHĀG. P. 7, 2, 1. तं शाय-  
मनुसंस्मृत्य पर्यतप्यद्दुःशम् MBu. 1, 6911. R. 4, 18, 32. DAÇ. 2, 16. BHĀG. P.

8, 16, 1. अनुशयपरितप्तहृदयं ÇĀKH. 85, 15, v. l. sich kasteien: उग्रं स तप

आस्थाय — सूर्येण सह धर्मात्मा पर्यतप्यत MBu. 1, 4784. — caus. Jmd

Schmerz bereiten, leiden machen, peinigigen: यश्चापि हि तपःश्लाघी न मनः  
परितापयेत् R. 5, 86, 9. धर्मेण परितापितशरीरः PAÑĀT. 162, 12. कं स्वीकृ-  
ता न विषयाः परितापयति Hir. III, 116. — Vgl. परिताप.

— विपरि pass. starken Schmerz empfinden, heftig leiden: यस्या ममा-  
भिषेकार्थं मनो विपरितप्यते R. GOBR. 2, 19, 3.

— पश्चात् hinterher Schmerz empfinden, Reue fühlen: तदा पश्चात्तप्यसे

MBu. 8, 1795. — Vgl. पश्चात्ताप.

— प्र 1) Gluth ausstrahlen, heiss sein, brennen, scheinen (von der

Sonne): भासास्तवोप्राः प्रतपन्ति विश्वो BHĀG. 11, 30. यावत्सूर्यः प्रतपति R.

3, 73, 71. 4, 5, 26. VARĀH. BRH. S. 27, c, 3. सूर्यः प्रतपतो अष्टः MBu. 4, 42.

भास्कारः प्रतपिष्यति 3, 13086. द्वितीयस्यैव सूर्यस्य युगात्ते प्रतपिष्यतः 881.

न स्म सूर्यः प्रतपते (med. stört das Metrum) शरद्गालसमावृतः 5, 7194. प्र-  
तपत्तमिवादिद्यं राश्ये स्थितमरिन्दमम् R. 2, 103, 9. BHĀG. P. 4, 16, c. 22, 56.

नत्रियाणां प्रतपतो तेजसा च बलेन च MBu. 13, 2125. 3038. — 2) wärmen,

erhitzen, warm machen, bescheinen: (आदित्यः) वसुधातलमर्धेनैव प्रतपत्य-  
र्धेनावच्छादयति BHĀG. P. 5, 1, 30. 2, 6, 16. लोकमिवाप्रतप्तम् 6, 16, 24. वयाम्

ÇĀT. Br. 3, 8, 18. पाणी PĀR. GĀHJ. 2, 4. KAUC. 27. KĀTJ. ÇH. 2, 6, 46. 47. 4, 14,

7. braten, rösten: मांसम् Suçr. 1, 230, 17. R. 2, 91, 65. (GOBR. 100, 63).

ausglühen (Gold): प्रतप्तकाञ्चन BHAVISHJOTTARA-P. in Z. d. d. m. G. 6,

94, 6. प्रतप्तोत्तमकुण्डल (प्रतप्त = प्रतप्तकाञ्चन) R. 5, 14, 4. प्रतप्त heiss: यु-  
द्ध MBu. 14, 2139. — 3) anzünden, erhellen: प्रतपं ज्योतिषा तमः RV. 9,

108, 12. — 4) Schmerz empfinden, leiden: मुहूर्तं प्रतपाप च R. 2, 12, 1.

sich kasteien: प्रतपतो वरः 1, 67, 8. — 5) durch Gluth peinigigen, es Jmd

heiss machen, zusetzen, quälen: रविप्रतप्त (द्विपेन्द्र) ÇĀK. 102. प्रतपत्तं

रणे रिपून् MBu. 6, 5567. pass. Schmerz empfinden, leiden: भययाञ्जा —  
प्रतप्यते BHĀG. P. 5, 18, 21. — caus. 1) wärmen, erhitzen: प्रताप्य GOBR.

3, 7, 13. 4, 8, 9. ĀÇV. GĀHJ. 1, 11. KAUC. 133. अग्नौ न च पौरी प्रतापयेत् M.

4, 53. JĀG. 1, 137. प्रतापय सुविश्रब्धः स्वगात्राणि MBu. 12, 5535 (प्रता-  
पयस्व विश्रब्धं स्व° PAÑĀT. III, 167). निगडैर्लौकैरग्निप्रतापितैः MĀRK. P.

14, 60. तयोस्तपःप्रभावेण दीर्घकालं प्रतापितः । धूमं मुमुचे विन्ध्यः MBu.

1, 7628. — 2) erhellen, in Flammen setzen: विदिशः काश्चिदर्कप्रतापिताः

R. 4, 60, 16. प्रताप्य शर्घर्वेण दिशः सर्वाः. — 3) durch Gluth verzehren,

— peinigigen; bedrängen, es Jmd heiss machen, zusetzen, peinigigen: प्र-  
ताप्य पृथिवीं सर्वा रश्मिवानिव तेजसा MBu. 4, 550. 5, 2056. प्रताप्य लो-

कानिव कालसूर्यो द्रोणः 7, 252. प्रताप्यमानाः सूर्येण कृत्यमानाश्च सायकैः

5067. R. 2, 74, 20. क्रोशन्ति कुञ्जराश्चात्र शर्घर्वप्रतापिताः MBu. 6, 3103.

प्रताप्यारिन् 7, 2462. 8, 1795. HAARV. 6430. BHĀG. P. 7, 4, 12. — Vgl.

प्रताप figg.

— अभिप्र, partic. °तप्त 1) gedörft Suçr. 1, 158, 12. — 2) Schmerzen

leidend, vor Schmerz vergehend R. 2, 21, 54.

— संप्र, partic. °तप्त Schmerzen leidend Suçr. 1, 70, 17. सुसंप्रतप्त

stark gedrängt, — mitgenommen KĀM. NITIS. 9, 77.

— प्रति 1) Gluth ausstrahlen gegen: अग्ने पते तपस्तेन तं प्रति तप AV.

2, 19, 1. तद्येष प्रति तेजिष्ठं तपति PAÑĀV. Br. 23, 16. — 2) warm machen,

bähen: अयः ÇĀKH. ÇH. 2, 8, 11. 16. 10, 5. 17, 1. अरणी GRHJ. 3, 1. ÇH. 2,

17, 3.

— वि 1) med. intrans. P. 1, 3, 27. VOP. 23, 20. brennen P., Sch. रवि-

र्वितपते ऽत्यर्थम् BHĀT. 8, 14. sich (ein Glied) wärmen P. 1, 3, 27. VĀRĪ.

वितपते पाणिम् Sch. VOP. — 2) auseinanderdrängen, durchdringen,

zerreißen (Gegens. von सम्): वितपन्नरितिम् AV. 12, 2, 45. विरोदसी घत-

पद्द्वेषं षषाम् RV. 3, 31, 10. पुरुषु चिदि तपति शिम्बलं चिदि वृश्चति 53,

22. — caus. erhitzen: शिलायाः प्रस्फोटनं वक्रिवितापितायाः VARĀH. BRH.

S. 53, 115.

— प्रवि durch Gluth verzehren, — peinigigen: उक्षप्रवितप्तकाय KĀM.

NITIS. 13, 9.

— सम् 1) erhitzen: संतप्तमेव तं शैलेन्द्रं नित्यं सवित्रा तिग्मरश्मि-

भिः R. 4, 44, 26. अग्निस्तप्तः स्नेहः Suçr. 1, 36, 19. संतप्तयाम् BHĀT. 2,

57. संतप्तचामीकरं ausgeglüht BHĀT. 3, 3. संतप्तव्रत (= गलितं ge-

schmolzen Sch.) VARĀH. BRH. S. 32, 10. ausdörren: वनदाकाग्निस्तप्तं गूढो

ऽग्निरिव पादपम् (संतापयति) R. 2, 83, 17. pass. impers. Einem heiss wer-

den: यदा वै स्त्रियै च पुंसश्च संतप्यते ऽथ रेतः सिच्यते ÇĀT. Br. 3, 5, 2, 16.

— 2) Schmerz empfinden, Reue fühlen: कैारव्यसैन्यस्य दीर्यमाणास्य

संपुगे । श्रुत्वा विरावं बद्धधा संतप्यति MBu. 7, 4731. दृष्ट्वापि धनं काले

संतप्यपुकारिणे 12, 6035. कृत्वा पापं हि संतप्य तस्मात्पापात्प्रमुच्यते

M. 11, 230. — 3) durch Gluth quälen, Schmerz bereiten, quälen, pei-

nigen; pass. Schmerz —, Leid empfinden, leiden: वक्रिसंतप्तदेह

Rt. 1, 27. जन्ममृणादिसंसारानलसंतप्त VERĀNTAS. (Allab.) No. 19. अर्क-

द्वानलानिलैः संतप्यमानः BHĀG. P. 3, 30, 23. कामाग्निनेव संतप्तः VID. 10.

नानाव्ययैः — संतप्यते ऽनर्थशतेश्च मानवः VARĀH. BRH. S. 104, 18. शिरो-